



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' में किन्नर विमर्श

अक्षय कुमार

शोधार्थी, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
इंदौर (मध्य प्रदेश)।

डॉ. मनीषा सिंह मरकाम

शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)।

सारांश

साहित्य में सभी का हित छुपा होता है, साहित्य मार्गदर्शन का कार्य करता है। साहित्य समाज के उन पक्षों को भी सामने लाने का प्रयास करता है जिन्हें हम अनदेखा कर देते हैं। समाज का ऐसा ही अनदेखा किया गया तथा उपेक्षित शोषित वर्ग किन्नर वर्ग है। किन्नरों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए गीतांजलि श्री का उपन्यास 'रेत समाधि' इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। 'रेत समाधि' में किन्नर विमर्श केवल किन्नर पात्र की उपस्थिति नहीं है बल्कि उसकी पहचान आत्मनिर्णय, सामाजिक स्वीकृति, देह, श्रम, मित्रता और मानवीय गरिमा का व्यापक विमर्श है। प्रस्तुत शोध-पत्र में 'रेत समाधि' में किन्नर विमर्श के प्रमुख आयाम-लैंगिक अस्मिता, देह, वेशभूषा, परिवार, मित्रता, सामाजिक बहिष्कार, मानवीय गरिमा और आत्मनिर्णय का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द – रेत समाधि, किन्नर विमर्श, सामाजिक बहिष्कार, मानवीय गरिमा

किन्नर प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति और समाज का हिस्सा रहे हैं, प्राचीन ग्रंथों जैसे – मनुस्मृति, अष्टाध्यायी, रामायण और महाभारत में किन्नर समुदायों का जिक्र हम देखते आये हैं। पौराणिक ग्रंथों में भी किन्नर या अर्धनारीश्वर जैसे शब्दों का उल्लेख मिलता है। शिव जिनका एक रूप अर्धनारीश्वर के रूप में पूजा जाता है जिसमें उनका आधा शरीर पुरुष तथा शेष आधा स्वरूप नारी के रूप में चित्रित किया गया है। जब समाज में ईश्वर के ऐसे स्वरूप को पूजा जाता है तो फिर क्यों इसी समाज में जब तृतीय लिंगी बच्चों के जन्म होते ही इसे अपने ही परिवार से दूर कर दिया जाता है। किन्नर वर्ग को समाज में अनेकों नामों से जाना जाता है जैसे संस्कृत में नपुंसक, हिन्दी में किन्नर, उर्दू में हिज़ड़ा, पंजाबी में खुसरो, अंग्रेजी में थर्ड जेंडर, ट्रांसजेंडर आदि शब्दों का प्रचलन है। इसके अतिरिक्त भी भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों और क्षेत्रों में कहीं अर्धनारीश्वर, छक्का और मामू जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

किन्नर समुदाय को समाज के द्वारा हिजड़ा, छक्का, मामू जैसी गालियों को सुनना पड़ता है। यह खेद का विषय है कि अपने आप को आधुनिक कहने वाले इस समाज ने अपनी संकुचित सोच का परिचय दिया है और आज भी किन्नर समुदाय को सम्मानजनक स्थान प्रदान नहीं किया है। किन्नर विमर्श का केन्द्रीय प्रश्न अपनी अस्मिता का है। जब समाज किसी व्यक्ति की पहचान को उसकी इच्छा के विरुद्ध निर्धारित करता है, तब अस्मिता का संकट उत्पन्न होता है। 'रेत-समाधि' का रोज़ी/रज़ा इसी प्रश्न को साहित्यिक रूप में सामने लाता है।

'रेत-समाधि' की कथा वृद्ध अम्मा के जीवन में घटने वाले परिवर्तन से आरंभ होती है। पति की मृत्यु से कटती हुई दिखाई देती है परन्तु रोज़ी का आगमन उनके जीवन में नये अनुभव, स्नेह और ऊर्जा लेकर आता है। रोज़ी/रज़ा 'रेत-समाधि' उपन्यास में किन्नर विमर्श का प्रमुख पात्र है। उसका नाम ही दोहरी उपस्थिति को दर्शाता है। एक ओर रोज़ी साड़ी और आभूषणों के साथ दिखाई देती है, दूसरी ओर रज़ा के रूप में दर्ज़ी का काम करने वाली पहचान सामने आती है। यह दोहरी उपस्थिति केवल वेश परिवर्तन नहीं, बल्कि उस समाज को चुनौती देती है जिसमें व्यक्ति को एक ही स्थिर पहचान में बांधने का प्रयास किया जाता है। "वह सोचती है बुआ है तो मास्टर मिलते हैं, रज़ा होंगे तो रोज़ी। एक आवाज है? कि सबकी एक होती है तन के हिसाब ज़नाना और मरदाना लगती है? कुछ ज़नानापन है, कुछ मरदानापन है।"¹ बेटी के घर में ठहरी माँ की देखरेख के लिये रोज़ी अक्सर आने लगी। वह सहेली की तरह माँ की निस्वार्थ देखभाल करने लगी।

"जीवन की नई करवट। उई उई करती माँ और संभालती लताड़ती रोज़ी।"² रोज़ी का घर में आना-जाना घर के बाकी सदस्यों को असहज सा कर देता था, बेटे के घर रहते हुये तो माँ जी उससे दहलीज़ के बाहर ही मिला करती थी, उस घर के भीतर आने तक की अनुमति न थी। जब वे आधुनिक विचारों और आधुनिक जीवनशैली वाली पत्रकार बेटी के घर रहने लगी तो भी रोज़ी का आना प्रारम्भ में उनकी बेटी को खटका। "बाद में वह सोचती रही गार्ड ने फोन किया होगा, क्या कहा होगा, कौन मिलने आई है, कि आया है, आने दे या क्या।"³

रोज़ी का जीवन संकेत करता है कि समाज जिन लोगों को अलग मानता है, वे भी सम्बन्धों, श्रम, प्रेम, देखभाल और स्मृति के उतने ही जटिल संसार में रहते हैं जितने अन्य लोग। किन्नर व्यक्ति को केवल सामाजिक समारोहों या अन्य भूमिकाओं तक सीमित करना उसकी मानवीयता को छोटा कर देता है। उपन्यास इस रूढ़ि को तोड़ता है। रोज़ी काम करती है, सिलाई कपड़े का काम जानती है, अम्माँ की



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

देखभाल करती है और भावनात्मक सम्बन्ध बनाती है। इससे किन्नर अस्तित्व का अधिक मानवीय और बहुआयामी रूप सामने आता है।

"पर बुआ नाचती गाती नहीं थी, बल्कि दिखावे का कोई तमाशा पेशा नहीं लगता उसका। स्वर कुछ भारी पर सो भी जैसा बहुत सी औरतों का होता है। माँ के साथ तहज़ीब से बैठती। माँ बात करती, नेग देती और नाश्ता भी और इतना ही बेटी को याद है।"⁴ एक दिन बेटी राह चलते रोज़ी को देख उसके पीछे जाती तब भेद खुलता है कि रोज़ी पुरुष का वेश धारण कर टेलर मास्टर रज़ा बन जाता है। वह रज़ा के रूप में बेटी के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे वह उसके लिये अनजान हो।

"रोज़ी बुआ ! बेटी बेसाख्ता दरवाजे से झाँक पड़ी। देह मुड़ी। अजनबी आँखें। अरे यह तो मर्द है ! मरदाना पंजाबी सूट में।"⁵

समाज में किन्नर को जीविका के लिये आम व्यक्ति से अधिक संघर्ष करना पड़ता है। भले ही संविधान में उन्हें समान अधिकार प्रदान किये हों। यही कारण है कि रोज़ी सम्मान के साथ जीने के लिये और जीविका कमाने के लिये समाज में पुरुष भेष को अपनाती है। रोज़ी व्यंग्य भरी आवाज में कहती है –

"हमारी गिनती न मुस्लिमीन किरस्तान में न यहूदी पारसी हिन्दू में न आदमी न औरत में, हमारा नाम नहीं लेना हमें पहचानना नहीं। हमें असल क्या तस्वुर से ही गायब रखना चाहते हैं।"⁶

परिवार व्यक्ति की पहली सामाजिक संस्था है किन्तु किन्नर व्यक्तियों के लिये परिवार कभी-कभी स्वीकार्यता के बजाये अस्वीकार का स्थान बन जाता है। 'रेत-समाधि' उपन्यास में किन्नर वर्ग का प्रतिनिधित्व करती रोज़ी की उपस्थिति के प्रति परिवार के सदस्यों की असहजता इसी सामाजिक स्थिति को सामने लाती है। किन्नर के अस्तित्व को अक्सर समाज गंभीरता से नहीं लेता।

"रोज़ी अम्माँ से कहती गई। हम तो उनके बाज़ार में भी नहीं कि हमें लुभाने के इश्तेहार बनाये, हमारे लिये दुकान खोले और नफ़ा कमाये। लोभी पंसारी को भी हमारी ग्राहकी नहीं चाहिये, तो सोच लो हम कितने निकृष्ट अदृश्य परिशिष्ट। न मेरे लिये फिल्म, न साहित्य, न कला, न कपड़े। जो आप उतार दें, उस उतरन में हम उतर लें।"⁷

इससे यह स्पष्ट होता है कि किन्नर को सामाजिक उपेक्षा, तिरस्कार और सामाजिक अलगाव झेलना पड़ता है। किन्नर विमर्श का प्रश्न केवल पहचान तक सीमित नहीं है, सम्मान भी उनका महत्वपूर्ण पक्ष है। लैंगिक पहचान के आधार पर अपमान, बहिष्कार या अवसरों से वंचित किया जाना सामाजिक असमानता का ही रूप है। 'रेत-समाधि' रोज़ी को करुणा या दया की वस्तु नहीं बनाता बल्कि उसके भीतर सक्रियता, श्रम,



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

संवेदना और सम्बन्धों की क्षमता विकसित करता है। इस प्रकार उपन्यास का किन्नर विमर्श अधिकारों की अमूर्त चर्चा से आगे बढ़कर गरिमा को सामने लाता है। 'रेत-समाधि' उपन्यास में किन्नर विमर्श का प्रतिनिधित्व करती रोज़ी सामाजिक और न्यायिक व्यवस्था पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। एक दारोगा द्वारा किन्नरों के प्रति उपेक्षा का भाव भी स्पष्ट रूप से अंकित है।

"आप जानती हैं न वो क्या था, किसके चक्करों में पड़ रही है, नाचते-गाते भीख माँगते और न जाने क्या-क्या पेशा करते सारे में फिरते रहते हैं ये लोग शादी ब्याह चोरी चकारी और जो मैं आपसे कह नहीं पाऊँगा, सब करते हैं, हम तो जानते हैं कोड़े लगाते हैं पकड़ के फिर छोड़ देते हैं, कोई अपना थाना थोड़े गंदा करना है और कहाँ से उनके लिये अलग सेल बनवाएँ।"⁸

'रेत-समाधि' में रोज़ी का व्यक्तित्व स्त्री और पुरुष की पारंपरिक द्विआधारी व्यवस्था को प्रश्नांकित करता है और यह संदेश देता है कि मनुष्य की पहचान को किसी एक निश्चित श्रेणी में स्थायी रूप से बंद नहीं किया जा सकता। रोज़ी दया की पात्र नहीं, बल्कि सक्रिय और प्रभावशाली पात्र है। अम्माँ और रोज़ी का सम्बन्ध उपन्यास के किन्नर विमर्श को और गहराई देता है। दोनों अलग-अलग सामाजिक हाशिये से आती हुई दिखाई देती हैं, किन्तु दोनों समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं से बाहर निकलकर अपने अस्तित्व को समझने का प्रयास करती हैं। 'रेत-समाधि' में सीमा का प्रतीक किन्नर विमर्श को व्यापक अर्थ देता है। भारत-पाकिस्तान की सीमा और स्त्री-पुरुष की लैंगिक सीमा दोनों मनुष्यों द्वारा बनाई गई रेखाओं के रूप में आती है।

अंततः कहा जा सकता है कि 'रेत-समाधि' में किन्नर विमर्श पहचान की घोषणा से आगे बढ़कर सामाजिक स्वीकार्यता, देह, श्रम, मित्रता और मानवीय गरिमा का प्रश्न बन जाता है। उपन्यास मनुष्य को उसकी सामाजिक श्रेणी में से पहले मनुष्य के रूप में देखने में संवेदना विकसित करता है।

संदर्भ सूची :-

- 1) शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र, हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श, मनीष पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2021, पृ-92
- 2) श्री गीतांजलि, रेत-समाधि, राजकमल प्रकाशन, चौथा संस्करण, जून-2022, पृ-150
- 3) वही, पृ-152
- 4) वही, पृ-155



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250-3552**

- 5) वही, पृ-228
- 6) वही, पृ-238
- 7) वही, पृ-239
- 8) वही, पृ-248